ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 172-174

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

स्वयं सहायता समूह की संरचना एवं प्रगति का अध्ययनः जनपद ललितपुर के विशेष सन्दर्भ में

डॉ0 आशा साहू

एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र विभाग, नेहरू पी. जी. कॉलेज, ललितपुर (उ0प्र0), भारत

सारांश : ***भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था है, जो निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। देश की जनसंख्या का लगभग 69 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्र में निवास करता है। यहां कृषि में अदृश्य बेरोजगारी, कृषि की परम्परागत तकनीक, अल्प रोजगार, रोजगार सृजन की सीमित क्षमता, लोगों का निम्न जीवन स्तर व्याप्त है। इससे लोग शहर की ओर पलायन की प्रवृत्ति बढती है। अतः देश के समावेशी विकास एवं इस पलायन को रोकने के लिए ग्रामीण जनसंख्या को आत्मनिर्भर बनाना, उनमे कौशल विकास करना, स्वयं के प्रयासो द्वारा अपनी समस्या का समाधान करना एवं ग्रामीण संसाधनों का समुचित दोहन होना आदि अत्यन्त आवश्यक है। स्वयं सहायता समूह इस दिशा में सहायक सिद्ध हो सकते है। समूह द्वारा समस्या की प्रकृति को समझकर उसे दूर करने का प्रयास किया जाता है।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय अर्थव्यवस्था, विकासशील अर्थव्यवस्था, जनसंख्या, ग्रामीण क्षेत्र, अदृश्य बेरोजगारी।

अध्ययन का क्षेत्र– प्रस्तुत शोधपत्र का अध्ययन क्षेत्र ललितपुर जनपद है, जिसमें 6 विकास खण्ड तालबेहट, जखौरा, बार, बिरधा, महरौनी, मड़ावरा, 12 न्याय पंचायत, 12 ग्राम पंचायत है। जनपद मे 120 स्वयं सहायता समूहों को अध्ययन हेतु चयनित किया गया है।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोधपत्र में वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक समंको का प्रयोग किया गया है प्राथमिक संकलित समंक उत्तरदाताओं के द्वारा दिए गए उत्तरों पर आधारित है। एवं द्वितीयक समंक उपलब्ध सम्बद्ध प्रकाशित आलेखों, पुस्तकों से संकलित किए गये है।

शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है–

ललितपुर जनपद में गठित स्वयं सहायता समूहों की संरचना एवं कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।

ललितपुर जनपद में गठित स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक प्रगति का अध्ययन करना।

ललितपुर जनपद का परिचय– ललितपुर उत्तर प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में स्थित ह्रदयाकार का जिला है। 1 मार्च 1974 को जनपद ललितपुर स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में आ गया। यह 24011' से 25014' उत्तरी अक्षांश तथा 78010' से 790 पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 5039 वर्ग किलोमीटर है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार ललितपुर की जनसंख्या 12,21,592 है जिसमें कुल दशकीय वृद्धि 24.94 प्रतिशत की हुई है। यहां का जनसख्या घनत्व 242 प्रति वर्ग किमी. है जो कि उत्तर प्रदेश में सबसे कम है। ललितपुर जनपद की ग्रामीण क्षेत्र की कुल जनसंख्या 4,46,189 है। ललितपुर की कुल कार्यशील जनसंख्या का 87.22 प्रतिशत कृषि एवं उससे संबंधित उद्योगों पर आधारित है। तथा अल्प रोजगार की स्थिति पाई जाती है। ललितपुर में ग्रामीण क्षेत्र में पिछडे.पन का मुख्य कारण लघु एवं कुटीर उद्योगों का समुचित विकास न होना तथा इनके प्रोत्साहन हेतु सूक्ष्म वित्त की उपलब्धता का न होना रहा है।

स्वयं सहायता समूह– स्वयं सहायता समूह एक छोटा समूह होता है जिसमें 10–20 सदस्य होते है यह 6 माह तक छोटी–छोटी बचत करते है। तत्पश्चात् बैंक से ऋण प्राप्त करते है। अर्थात स्वयं सहायता समूह एक ऐसा अनौपचारिक संगठन है, जो सदस्यों द्वारा की गई छोटी–छोटी बचत के माध्यम से सदस्यों की आजीविका के साधनों में वृद्धि के लिए प्रेरित करता है। इस संकल्पना में मितव्ययता, ऋण और स्वयं सेवा का सिद्धान्त निहित होता है।

स्वयं सहायता समूह की उत्पत्ति भारत में 1970 के दशक में हुई। वर्ष 1972 में डॉ. ईला भटट द्वारा सेल्फ इम्प्लायड वीमन्स एसोएिशन का गठन किया गया जिसने निर्धनता उन्मूलन, महिला रोजगार वमहिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन अधिक संगठित व व्यवस्थित रूप से स्वयं सहायता समूह आंदोलन की शुरूआत बांग्लादेश के नोबेल पुरूस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में हुई।

ललितपुर जनपद में स्वयं सहायता समूह– ललितपुर जनपद में स्वयं सहायता समूहों को जिला ग्राम्य विकास अभिकरण द्वारा 1999 से गठित किया गया। एवं गैर सरकारी संगठनों को इनके सुविधादाता के रूप में चयनित किया गया। जिनके मार्गदर्शन से समूह विभिन्न प्रकार के कियाकलाप, बचत करना, एजेण्डा तैयार करना, रजिस्टरों का रखरखाव आदि कार्य सम्पादित हुए। स्वयं सहायता समूह योजना का मुख्य उद्देश्य गरीबों को आत्मनिर्भर बनाना है। 1 अप्रैल 1999 से 31 मार्च 2012 तक कुल स्वयं सहायता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

समूहों की 4485 है।

स्वयं सहायता समूह के निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. समूह के सफल संचालन हेतु समूह के लिए एक नियमावली का निर्माण करना।

2. निम्नवर्ग को आर्थिक रुप से आत्मानिर्भर बनाने हेतु बचत की भावना को प्रोत्साहन देना ।

3. समूह के सदस्यो में एकता एवं संगठन की भावना विकसित करना।

4. जातिवाद की भावना से ऊपर उठकर सभी लोगों के साथ मिलकर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तालिका–1

ललितपुर जनपद के विकासखण्डों में गठित स्वयं सहायता समूहों की प्रगति का विवरण

1 अप्रैल 1999 से 31 मार्च 2012 तक

क्र.	विकासखण्ड	गठित स्वयं सहायता समूहों की संख्या	प्रथम ग्रेडिंग	द्वितीय ग्रेडिंग	वित्त पोषण
1	बार	573	310	161	181
2	बिरधा	683	324	227	220
3	महरौनी	681	348	259	240
4	मड़ावरा	733	347	217	191
5	जखौरा	956	469	277	264
6	तालबेहट	859	411	231	211
	योग	4485	2209	1392	1316

स्त्रोत– जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, 2012

स्वयं सहायता समूह गठन की प्रकिया – स्वयं सहायता समूह समूहों के गठन में निम्न बिन्दुओं का अनुसरण किया जाता हैं–

एस.एच.जी. का गठन निहित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। समूह के सदस्यों के मार्गदर्शन के लिए फैसिलिटेटर (सुविधादाता) नियुक्त किया जाता है।

समूह में केवल गरीबी रेखा के नीचे के 18 से 20 व्यक्ति होते है।

सदस्यों के पास गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने का प्रमाण होना चाहिए।

समूह द्वारा अपने उद्देश्यों के अनुसार एक नियमावली बनाकर प्रत्येक बैठक हेतु एजेण्डा तैयार किया जाता है।

समूह में एक परिवार से एक ही सदस्य होता है।

समूह का बचत फण्ड व बैंक में खाता होता है।

समूहों का मानकीकरण–

गठन के प्रारम्भिक 6 माह तक सदस्यों में बचत की आदत डालने, नियमित बैठक करने, विचार विमर्श के उपरान्त आन्तरिक ऋण वितरण करने, उसकी वसूली की व्यवस्था पर बल दिया जाता है।

6 माह पश्चात् समूह की समीक्षा की जाती है। इसे मानकीकरण अथवा ग्रेडिंग कहते हैं। यह कार्यवाही किसी संस्था गैर सरकारी संगठन अथवा अन्य विशेशज्ञों के माध्यम से की जा सकती है।

समूह के सशक्त होने पर उसे रिवाल्विंग फण्ड उपलब्ध कराया जाता है व उसे बैंक के सम्पर्क में लाया जाता है।

आगामी एक माह की समाप्ति तक पुनः समूह का मानकीकरण कर समूह के सशक्त सिद्ध होने पर उसके द्वारा विधिवत् एवं पूर्णरुपेण कार्य आरम्भ किया जाता है।

तालिका–2

स्वयं सहायता समूहों द्वारा चयनित कियाकलाप

क्र	चयनित कियाकलाप	समूहों की संख्या	प्रतिशत
1	कृषि व संबंधित	15	12.5
2	डेयरी उद्योग	35	29.17
3	खाद्य प्रसंस्करण	20	16.67
4	वस्त्र निर्माण, सिलाई, कढ़ाई	06	05.00
5	हस्तकला, दरी, कालीन निर्माण	05	04.17
6	विपणन	12	10.00
7	हस्तशिल्प, मूर्ति निर्माण	08	06.67
8	अन्य उद्योग	19	15.82
	कुल	120	100.00

स्त्रोत– प्राथमिक समंक।

तालिका–3

स्वयं सहायता समूह के सदस्यो की व्यवसायिक पृष्ठभूमि का विवरण

क्र	पृष्ठभूमि का विवरण	पुरुष	महिला	कुल सदस्य	प्रतिशत
1	कृषि में स्व नियोजित	126	14	140	12.50
2	गैर कृषि में स्व नियोजित	134	46	180	16.07
3	नियमित मजदूरी/वेतन अर्जक	84	10	94	08.39
4	कृषि में आकस्मिक श्रमिक	95	129	224	20.00
5	गैर कृषि में आकस्मिक श्रमिक	54	168	222	19.83
6	अन्य	00	260	260	23.21
	योग	493	627	1120	100.00

स्त्रोत– प्राथमिक समंक।

तालिका–4

स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का उद्देश्य

क्र	उद्देश्य	समूहों की संख्या	प्रतिशत
1	रोजगार प्राप्ति हेतु	120	100
2	ऋण/अनुदान प्राप्ति हेतु	105	87.50
3	बचत करने	75	62.06
4	आय स्रोतों वृद्धि	50	41.67
5	अन्य कारण	25	20.83

स्त्रोत– प्राथमिक समंक।

तालिका–5

स्वयं सहायता समूह के आर्थिक कियाकलाप की पिछले वर्षो में स्थिति के बारे में जानकारी

क्र	कारक	समूहों की संख्या	प्रतिशत
1	वृद्धि	20	1667
2	स्थिर	90	7500
3	अवनति	10	0833

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

स्त्रोत– प्राथमिक समंक।

ललितपुर जनपद में स्वयं सहायता समूह में आय वृद्धि 30 प्रतिशत समूहों ने स्वीकार की। समूह के सदस्यों की स्वरोजगार की आय का 80 प्रतिशत भाग मूलभूत आवश्यकताओं पर व्यय हो जाता है। सूचना दाता द्वारा 20 प्रतिशत बचत की बात स्वीकार की गई है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन से स्पष्ट है कि ललितपुर जनपद में –

अधिकतम समुहों का गठन सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप से कि गया।

सदस्यों द्वारा सर्वाधिक मासिक बचत की जाती है।

अधिकतम सदस्यों ने स्वयं सहायता समूह से जुड़े रहने की बात स्वीकारी।

समूह के द्वारा बड़ी संख्या में ग्रामीणवासी बैंक के साथ जुड़कर आर्थिक गतिविधियों का संचालन कर रहे है।

समूह वित्तीय लेन देन नियमित रूप से करते है।

ललितपुर जनपद में स्वयं सहायता समूह स्वरोजगार, स्वाबलम्बन, आर्थिक एवं सामाजिक गतिशीलता के सृजन का ललितपुर जनपद में माध्यम है।

सामूहिक प्रयास से सदस्यों के जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार सम्भव हो सकता है, यदि सहभागिता, पारदर्शिता, भ्रष्टाचार में कमी की जाए।

सुझाव– ललितपुर जनपद में स्वयं सहायता समूहों को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनके लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत है–

समूह की आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए गैर सरकारी संगठनों को ऐसे ठोस कार्य करना चाहिए जिनसे समूह एवं सरकार दोनों लाभान्वित हो। प्रत्येक समूह में सहयोग की भावना व मधुर संबंध एवं समन्वय स्थापित होना अति आवश्यक है।

सुविधादाता द्वारा समूह की संकल्पना उचित मार्गदर्शन में की जाए।

समूह की क्रियाकलाप का चयन स्थानीय प्रकृति तथा कच्चे माल की आपूर्ति को ध्यान में रखकर की जाए।

स्वयं सहायता समूहों द्वारा उत्पादित वस्तु के विक्रय हेतु उचित व्यवस्था की जाए।

समूह के सदस्यों को अधिक से अधिक बचत करने को प्रोत्साहित किया जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. झिंगन एम.एल.,"विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन", विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1983.
2. 'विकास प्रभा', आई.डी.वी.आई. बैंक लिमिटेड का हिन्दी त्रैमासिक, अक्टूबर–सितम्बर 2009.
3. राय पारसनाथ,"अनुसंधान परिचय", लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा 1993.
4. खरे संजय, ग्रामीण विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका, 2011.
5. स्वयं सहायता समूह गठन के लिए प्रशिक्षकों हेतु मार्गदर्शिका, ग्रामीण डेवलपमेण्ट सर्विसेज, लखनऊ, 2016.
6. समयान्तर मासिक पत्रिका।
8. योजना मासिक पत्रिका।
9. कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका।

*****